

नलिन खोईवाल
इंदौर, मध्यप्रदेश

हिंदी के लिए आशा का दिनकर एक दिन जरूर उगेगा

हिन्दी हमारी राजभाषा है और राष्ट्रभाषा बनने की द्वार-देहरी पर दस्तक दे रही है।राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है क्योंकि हिन्दी ही सरल,सहज,सौम्य और सुमधुर भाषा है तथा राष्ट्रीय एकता, प्रेम, सभ्यता, संस्कृति, समृद्धि और विनम्रता की प्रतीक है, किंतु अंग्रेजी भाषा रौब व गुलामी की सूचक है। अगर हम भारत को एक सूत्र में पिरोना चाहते हैं तो हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। अंग्रेजी बेशक अंतरराष्ट्रीय भाषा है, किंतु वह हमारी राजभाषा और राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती है।

राष्ट्रीय एकता को लेकर भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने कहा था कि हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए एक सुंदर हार का सृजन करेगी। स्वतंत्र भारत की भाषा हिन्दी ही होनी चाहिए, क्योंकि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी ही देश की एकता और अखंडता को स्थिर रख सकती है। हिन्दी बड़ी बहन है, जबकि सारी क्षेत्रीय भाषाएं उसकी छोटी बहनें हैं। यदि हमें सुख-शांति से परिवार चलाना है तो छोटी बहनों को भी साथ में लेकर चलना होगा। साथ ही छोटी बहनों को भी चाहिए कि वे शीर्ष पर विराजित बड़ी बहन का भी सम्मान करें। हिन्दी एक वटवृक्ष है व समस्त क्षेत्रीय भाषाएं उसकी शाखाएं हैं और शाखाओं के बिना एक वट वृक्ष प्राणविहीन ही तो है।

14 जनवरी, 1949 को संविधान की धारा 343 (ए) के तहत हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि हिन्दी भाषी प्रदेश में होते हुए भी हमें राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार व उसके उत्थान हेतु हिन्दी सप्ताह मनाने की आवश्यकता पड़ रही है। हिंदुस्तानी अंग्रेजी बोलने में अपनी शान समझते हैं। दिवंगत व्यंग्यकार शरद जोशी ने ठीक ही कहा है- हम हिंदुस्तानी जमीन से जरा ऊपर उठे नहीं कि अंग्रेजी बोलने लगते हैं।

इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि छिहत्तर वर्षों बाद भी राजभाषा हिन्दी का स्थापत्य कितना है ? ढाक के वो ही तीन पात... हम जहां से चले थे 77 वर्षों बाद भी हम वहीं आकर पानी के बुलबुले की तरह ठहरे हुए है। सुबह से हो गई शाम फिर भी चले वो ही अढ़ाई कोस। जब तक हम हिन्दी को उसके पैरों पर चलना नहीं सिखाएंगे, तब तक वह बैसाखियों के सहारे ही चलती रहेगी।

हिन्दी को उत्कृष्ट भाषा न मानकर इसे आम जनता की भाषा मानें। भारत की 75 प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है तथा बामुश्किल 2 प्रतिशत जनता ही टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल पाती है। सर्वोच्च पदों पर आसीन हमारे हुक्मरान स्वयं हिन्दी नहीं जानते फिर हम किससे उम्मीद कर रखें। हमारे नेताद्वय स्वयं अंग्रेजी में भाषण देते हैं। यह हमारा दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है ? कितने आश्चर्य की बात है कि हमारे नेता ग्रामीण विकास पर निरक्षरों को भाषण भी अंग्रेजी में देते हैं। ग्रामीणों को समझ में आए या नहीं, तालियां व वाहवाही अवश्य लूटने का प्रयास करते हैं। ऐसे में कैसे होगा हिन्दी का उत्कर्ष ? भारतीय चुनाव आचार संहिता में यह प्रावधान होना चाहिए कि वे ही व्यक्ति चुनाव लड़ सकेंगे जिन्हें हिन्दी आती है या वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने व उसे सीखने की अंतर्मन से अभिलाषा रखते हों।



आज विदेशी कंपनियों का भारत में खुला आमंत्रण हमें स्वतंत्रता से परतंत्रता की ओर ही ले जाएगा| जब तक हम हिन्दी के प्रति पनपी अपनी हीन मानसिकता में परिवर्तन नहीं लाएंगे तब तक कितनी भी हीरक जयंती मना लें, हिन्दी का भला होने वाला नहीं है| एक रूसी साहित्यकार ने राजधानी दिल्ली में अंग्रेजीमय वातावरण देख कर व्यंग्य किया था कि यहां का वातावरण देख कर ऐसा लगता है कि ये भारत की राजधानी नहीं वरन् इंग्लैंड की राजधानी है|

आज आजादी के 79 वर्षों बाद भी हिन्दी का उत्थान उतना नहीं हो पाया जितनी हमें उम्मीद थी| इसके लिए हम स्वयं दोषी हैं, वरना आज हमें हिन्दी सप्ताह मनाने की आवश्यकता ही क्यों पड़ती? हमें यह समझ लेना चाहिए कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो कि हमारी राष्ट्रीय एकता को चिर स्थायी रख सकती है, अन्य कोई भाषा नहीं|अतः आज हमारी पहली आवश्यकता है हिन्दी को महत्व देकर उसे शिखर तक पहुंचाने की|

इसके लिए जरूरी है समस्त कार्यालयों में शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में हो| समस्त परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी हो तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाए| तभी हम हिन्दी के परिधान धारण कर अंग्रेजी का चोला उतार फेकेंगे| 77 वर्षों में राजभाषा हिन्दी ने संघर्ष कर अपने दम पर ही वैश्वीकरण की ओर कदम बढ़ाए है और आज वह अपने चरमोत्कर्ष पर है|एक दिन अवश्य ही आशा का दिनकर उगेगा और हिंदी के जीवन में नया सवेरा उदित होगा|और...वह दिन हम हिंदी भाषियों के लिए किसी उत्सव से कम नहीं होगा|क्योंकि हमें हिंदीमय होकर के हिंदी को जीवन का एक उत्सव बनाना है|अब हिंदी को ही हमें जीना है,ओढ़ना है,बिछाना है और इसका परचम समूचे विश्व में फहराना है|क्योंकि आज हिंदी वैश्विक भाषा बनने को आतुर है|